भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
IIT INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY BANARAS HINDU UNIVERSITY

☎ 0542 2366676: e-mail : pro.ppc@itbhu.ac.in

कुलसचिव कार्यालय
(प्रेस एवं प्रचार प्रकोष्ठ)
दैनिक जागरण
Office of the Registrar
(Press & Publicity Cell)
दिनांक : 13.07.2019

250 से अधिक विचार, करेंगे उद्धार

जागरण संवाददाता, वाराणसी : आइआइटी, बीएचयू के रसायन अभियांत्रिकी विभाग की ओर से कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग के सहयोग से एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर स्थापित किया जा रहा है। कृषि क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने को लेकर केंद्र को अभी तक 250 से अधिक विचार प्राप्त हुए हैं। इनका उपयोग कर कृषि व उससे संबंधित क्षेत्रों को समृद्ध किया जाएगा। यह बातें महामना एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर के मुख्य पर्यवेक्षक प्रो. प्रदीप कुमार मिश्र ने शुक्रवार को मालवीय उद्यमिता एवं नव प्रवर्तन केंद्र स्थित सभागार में आयोजित प्रेसवार्ता में कही।

प्रो. प्रदीप ने बताया कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना-रिमुनेरेटिव एप्रोचेज फार एग्रीकल्चर एंड एलायड सेक्टर्स रिजुवनेशन (आरकेवीवाई-रफ्तार) के तहत स्थापित इस केंद्र के लिए देशभर के युवाओं से विचार आमंत्रित किए गए थे। खाद्य प्रसंस्करण, कचरे से धन की प्राप्ति, प्रत्यक्ष बिक्री के लिए प्लेटफार्म, यंत्रीकरण आदि से संबंधित मिले नए विचारों का चुनाव व अनुमोदन 18 व 19 जुलाई को चुनाव समिति करेगी। चयनित विचारों को मूर्त रूप देने के लिए आर्थिक सहयोग के साथ ही उचित मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराया जाएगा। बताया कि आइआइटी, बीएचयू व उत्तर प्रदेश जैव विकास बोर्ड के बीच हाल ही में एक करार किया गया है, जिसके तहत किसानों को तकनीक व ज्ञान आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इससे बाजार की मांग के आधार पर जैव ऊर्जा आधारित एंजाइम, तेल उत्पादन व अन्य जैविक उत्पादों के व्यापार को बढ़ावा मिलेगा।

एग्री बिजनेस इन्क्यूबेटर की जानकारी देते नीदरलैंड के विशेषज्ञ पीटर वॉन व प्रो .पी के मिश्र ● जागरण

पहल

- आइआइटी-बीएचयू में स्थापित किया जाएगा एग्री बिजनेस इनक्यूबेटर
- रफ्तार योजना के तहत कृषि क्षेत्र के विकास के लिए मांगे गए थे विचार

विकसित देशों में नवाचार का रूप है स्टार्टअप

प्रो. प्रदीप मिश्र के मुताबिक नीदरलैंड के पीयूएम से सहयोग का अनुरोध किया गया था। 30 जून को नीदरलैंड पीयूएम की ओर से वरिष्ठ विशेषज्ञ पीटर वॉन को आइआइटी, बीएचयू भेजा गया था। दो सप्ताह के वर्कशॉप के बाद पीटर वॉन ने अपने अनुभव करते हुए बताया कि भारत में स्टार्टअप का अर्थ रोजगार सृजन है, जबकि विकसित देशों में स्टार्टअप स्वतंत्र रूप से अपने सपनों को पूरा करने का माध्यम है।

विदेशों में जहां यह निर्माण व नवाचार का रूप है, वहीं भारत में यह उत्तरजीविता का साधन है। विकसित देशों में स्टार्टअप को अपने निवेशकों को आकर्षित करने के लिए मानक स्थापित करने होते हैं जो बहुत ही चुनौतीपूर्ण है।